अल्पशिक्षित महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने में शासकीय योजनाओं की भूमिका पर एक अध्ययन खण्डवा जिले के विशेष सन्दर्भ में

डॉ. उषा वैद्य[1], माधुरी शर्मा[2]

[1]प्राध्यापक, समाजशास्त्र, रबीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय, रायसेन (म.प्र)
[2]शोधार्थी, रबीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय, रायसेन (म.प्र)

OPEN ACCESS

Volume: 4

Issue: 4

Month: December

Year: 2025

ISSN: 2583-7117

Published: 04.12.2025

Citation:

डॉ. उषा वैद्य, माधुरी शर्मा "अल्पशिक्षित महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने में शासकीय योजनाओं की भूमिका पर एक अध्ययन खण्डवा जिले के विशेष सन्दर्भ में" International Journal of Innovations in Science Engineering and Management, vol. 4, no. 4, 2025, pp. 60-67.

DOI:

10.69968/ijisem.2025v4i460-67

This work is licensed under a Creative Commons Attribution-Share Alike 4.0 International License

सारांश

भारत जैसे विकासशील देश में महिलाओं की सामाजिक, आर्थिक और शैक्षणिक स्थिति राष्ट्र की प्रगति का आधार मानी जाती है। महिला सशक्तिकरण केवल अधिकारों की सुरक्षा तक सीमित न होकर उन्हें आत्मनिर्भर बनाने की समग्र प्रक्रिया है। इसी दिशा में भारत सरकार एवं राज्य सरकारों द्वारा शिक्षा, कौशल विकास, स्वरोजगार, ऋण सहायता और सामाजिक सुरक्षा जैसी अनेक योजनाएँ लागू की गई हैं। प्रस्तुत शोध का उद्देश्य अल्पशिक्षित महिलाओं हेतु संचालित इन योजनाओं एवं कार्यक्रमों की जानकारी एकत्र करना, महिलाओं में उनकी जागरूकता का स्तर जानना, योजनाओं की प्रभावशीलता का विश्लेषण करना तथा क्रियान्वयन के दौरान आने वाली चुनौतियों की पहचान कर उपयुक्त सुझाव प्रस्तुत करना है। यह अध्ययन मिश्रित शोध पद्धति पर आधारित है, जिसमें गुणात्मक एवं मात्रात्मक दोनों विधियों का उपयोग किया गया। अल्पशिक्षित उत्तरदाताओं की स्थिति को देखते हुए डेटा संकलन हेतु साक्षात्कार अनुसूची का प्रयोग किया गया, जिसका पायलट परीक्षण 20 महिलाओं पर किया गया। शोध मध्यप्रदेश के खंडवा जिले तक सीमित रहा और उद्देश्यपूर्ण नमूना चयन से 650 में से 630 पूर्ण उत्तरदाताओं का डेटा प्राप्त हुआ। निष्कर्षों से ज्ञात हुआ कि शासकीय योजनाएँ अल्पशिक्षित महिलाओं के आर्थिक, सामाजिक और मानसिक सशक्तिकरण में प्रभावी हैं, हालांकि जानकारी का अभाव, स्थानीय भाषा में प्रचार की कमी और प्रक्रिया की जटिलता जैसी चुनौतियाँ मौजूद हैं। इन योजनाओं को अधिक सुलभ, समावेशी और संवेदनशील बनाकर महिलाओं के जीवन में महत्वपूर्ण सकारात्मक परिवर्तन लाया जा सकता है।

कीवर्ड; महिला सशक्तिकरण, आत्मनिर्भर, सरकारी योजनाएँ, अशिक्षित महिलाएं, सामाजिक और मानसिक सशक्तिकरण

प्रस्तावना

भारत जैसे विकासशील देश में महिलाओं की सामाजिक, आर्थिक और शैक्षणिक स्थिति समाज की प्रगति के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण मानी जाती है। महिला सशक्तिकरण केवल उनके अधिकारों की रक्षा तक सीमित नहीं है, बल्कि यह एक समग्र प्रक्रिया है जो उन्हें आत्मनिर्भर बनने की दिशा में अग्रसर करती है। विशेषकर अल्पशिक्षित महिलाएं, जो सीमित शैक्षणिक योग्यता के कारण पारंपरिक कार्यों तक सीमित रहती हैं, उनके लिए आत्मनिर्भरता प्राप्त करना एक बड़ी चुनौती है।

भारत सरकार एवं राज्य सरकारों द्वारा अनेक योजनाएं चलाई जा रही हैं जिनका उद्देश्य महिलाओं को शिक्षा, कौशल विकास, स्वरोजगार, ऋण सहायता तथा सामाजिक सुरक्षा प्रदान कर उन्हें स्वावलंबी बनाना है। किंतु इन योजनाओं का वास्तविक लाभ किस हद तक अल्पशिक्षित महिलाओं तक पहुँच रहा है, यह एक विचारणीय प्रश्न है।

वर्तमान अध्ययन का उद्देश्य यह समझना है कि इन शासकीय योजनाओं ने अल्पशिक्षित महिलाओं के जीवन में किस प्रकार की भूमिका निभाई है– क्या ये योजनाएं वास्तव में उनके आर्थिक एवं सामाजिक सशक्तिकरण में सहायक सिद्ध हो रही हैं या नहीं। साथ ही यह भी विश्लेषण करना महत्वपूर्ण है कि योजनाओं के क्रियान्वयन में क्या समस्याएँ आ रही हैं और इन्हें दूर करने हेतु क्या उपाय किए जा सकते हैं।

IJISEM
INTERNATIONAL JOURNAL OF INNOVATIONS IN SCIENCE ENGINEERING AND MANAGEMENT

यह शोध अध्ययन मध्यप्रदेश के संदर्भ में किया जा रहा है, जहाँ एक बड़ी संख्या में महिलाएं अल्पशिक्षित हैं और उनके समक्ष रोजगार एवं आत्मनिर्भरता की अनेक चुनौतियाँ हैं। यह अध्ययन क्षेत्रीय परिप्रेक्ष्य में योजनाओं के प्रभाव, पहुंच, जागरूकता तथा उनकी व्यावहारिक उपयोगिता का आंकलन करेगा।

भारत में महिला शिक्षा और रोजगार की वर्तमान स्थिति

भारत में महिलाओं की शिक्षा और रोजगार का वर्तमान परिदृश्य प्रगति और लगातार चुनौतियों का मिश्रित परिदृश्य दर्शाता है। महिला साक्षरता दर और स्कूल नामांकन बढ़ाने में महत्वपूर्ण प्रगति के बावजूद, पर्याप्त अंतराल बना हुआ है, खासकर कम शिक्षित महिलाओं के बीच। ग्रामीण क्षेत्रों में, सामाजिक-सांस्कृतिक मानदंड, आर्थिक कठिनाइयाँ और अपर्याप्त बुनियादी ढाँचा लड़कियों के लिए शिक्षा तक पहुँच में बाधा डालता है। जबकि प्राथमिक विद्यालय में नामांकन दर लगभग सार्वभौमिक स्तर पर पहुँच गई है, माध्यमिक और उच्च शिक्षा में संक्रमण एक बड़ी बाधा बनी हुई है, जिसमें स्कूल छोड़ने की दर चिंताजनक रूप से अधिक है। [1]

भारत में कम पढ़ी-लिखी महिलाओं को अक्सर स्थिर और अच्छे वेतन वाली नौकरी पाने में कई तरह की बाधाओं का सामना करना पड़ता है। सीमित शैक्षणिक योग्यता उनके नौकरी के अवसरों को सीमित करती है, जिससे कई महिलाएं अनौपचारिक क्षेत्रों तक सीमित हो जाती हैं, जहाँ कम वेतन, खराब कामकाजी परिस्थितियाँ और नौकरी की सुरक्षा की कमी होती है। श्रम बाजार में लैंगिक असमानता बहुत ज़्यादा है, जहाँ महिलाओं को पुरुषों की तुलना में उच्च बेरोज़गारी दर और कम श्रम शक्ति भागीदारी का सामना करना पड़ता है। इसके अतिरिक्त, कम पढ़ी-लिखी महिलाओं के लिए उपलब्ध नौकरियों के प्रकार अक्सर कम-कुशल, श्रम-गहन भूमिकाओं तक सीमित होते हैं, जो कैरियर में उन्नति के लिए बहुत कम गुंजाइश देते हैं।

महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम (मनरेगा) जैसी सरकारी पहल ग्रामीण महिलाओं के लिए रोजगार की गारंटी देकर कुछ राहत प्रदान करती है। हालाँकि, ये कार्यक्रम पुरुष और महिला रोजगार दरों के बीच महत्वपूर्ण अंतर को पाटने के लिए पर्याप्त नहीं हैं। प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना (पीएमकेवीवाई) जैसे कौशल विकास कार्यक्रमों का उद्देश्य व्यावसायिक प्रशिक्षण के माध्यम से महिलाओं की रोजगार क्षमता को बढ़ाकर इसका समाधान करना है। फिर भी, देश भर में बड़ी संख्या में अशिक्षित महिलाओं की जरूरतों को पूरा करने के लिए इन कार्यक्रमों की पहुंच और प्रभाव का विस्तार करने की आवश्यकता है।

शोध उद्देश्य

प्रस्तुत शोधकार्य के निम्नलिखित उद्देश्य हैं:-

1. प्रस्तुत शोध आलेख का उद्देश्य अल्प शिक्षित महिलाओं हेतु शासन द्वारा संचालित योजनाओं एवं कार्यक्रमों की जानकारी एकत्र करना।
2. महिलाओं में अल्प शिक्षित महिलाओं हेतु शासन द्वारा संचालित योजनाओं एवं कार्यक्रमों के प्रति जागरूकता का स्तर पता लगाना है।
3. शासन द्वारा संचालित योजनाओं एवं कार्यक्रमों की प्रभावशीलता का अध्ययन करना।
4. अल्प शिक्षित महिलाओं हेतु शासन द्वारा संचालित योजनाओं एवं कार्यक्रमों के कियान्वयन में आने वाली कठिनाइयों को रेखांकित कर आवश्यक सुझाव प्रस्तुत करना।

साहित्य समीक्षाएँ

यह पेपर अन्य देशों के बीच भारत की स्थिति की आलोचनात्मक जांच करता है और संयुक्त राष्ट्र के सतत विकास लक्ष्य -5 को प्राप्त करने के लिए तैयारियों का पता लगाने की कोशिश करता है। यह पेपर जर्नल, पुस्तकों, विभिन्न, गैर सरकारी संगठनों, सरकार और अंतर्राष्ट्रीय संगठनों और वेबसाइटों की रिपोर्टों में प्रकाशित मौजूदा साहित्य की समीक्षा के रूप में द्वितीयक स्रोतों के आधार पर तर्क विकसित करता है। पेपर भारत में महिला सशक्तिकरण, विभिन्न मॉडलों और आयामों की आलोचनात्मक जांच करता है। यह पेपर संवैधानिक सुरक्षा गार्डों के साथ-साथ सरकार की योजनाओं और कार्यक्रमों और उनके कार्यान्वयन, महिला सशक्तिकरण के संकेतकों पर चर्चा करता है। हालाँकि, अन्य देशों की तुलना में देश का स्थान नीचे है। 2030 तक एसडीजी-5 हासिल करने के लिए कार्यक्रमों का पुनर्मूल्यांकन और संशोधन करने की आवश्यकता है। [2]

आने वाले दशक में, 1 अरब से अधिक लोगों के साथ भारत में दुनिया की सबसे बड़ी कार्य-आयु वाली आबादी होगी। यह जनसांख्यिकीय लाभांश, जब बढ़ती हुई शिक्षित आबादी के साथ मिल जाता है, तो भारत के आर्थिक और सामाजिक विकास को बदलने की क्षमता रखता है। हालाँकि, निजी और सरकारी क्षेत्र अकेले आवश्यक नौकरियाँ पैदा करने में पर्याप्त नहीं हैं। महिलाओं में उद्यमिता समग्र समाधान का एक महत्वपूर्ण घटक है। यह न केवल रोजगार सृजन के जरिए अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देता है, बल्कि महिलाओं के लिए परिवर्तनकारी सामाजिक और व्यक्तिगत परिणाम भी प्रदान करता है। भारत में महिलाओं के बीच उद्यमशीलता को अनलॉक करना एक जटिल प्रयास है, लेकिन यह आने वाली पीढ़ियों के लिए भारत और इसकी महिलाओं के आर्थिक और सामाजिक प्रक्षेप पथ को बदलने का एक अभूतपूर्व अवसर प्रदान करता है। [3]

दुनिया भर में लैंगिक समानता के कारण महिला उद्यमिता अर्थव्यवस्था की रीढ़ बनकर तेजी से बढ़ रही है। इस पेपर में एमएसएमई जैसे अलग-अलग क्षेत्रों में महिलाओं की भूमिका के बारे में बात की गई। इस अध्याय में एमएसएमई के स्वामित्व वाली महिलाओं का वर्तमान अनुपात, एमएसएमई मंत्रालय के अनुसार भारत में महिलाओं के रोजगार का अनुपात दर्शाया गया है। पेपर ने भारत में राज्यवार महिला श्रमिक जनसंख्या का खुलासा किया। अध्ययन ने निष्कर्ष निकाला कि मजबूत नेतृत्व गुणों के कारण, व्यवसाय में महिलाएं आर्थिक वृद्धि और विकास में अपने पुरुष समकक्षों के समान ही कुशल हैं और महिलाओं के स्वामित्व वाले व्यवसाय समान उद्योगों में समान आयु के पुरुष-स्वामित्व वाले व्यवसायों की तुलना में 8-10% अधिक राजस्व उत्पन्न करते हैं। [4]

शिक्षा महिलाओं और समग्र रूप से राष्ट्र के विकास के लिए एक प्रभावी साधन है। यह महिलाओं के जीवन में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है जो उन्हें परिवार और समाज में कई भूमिकाएँ निभाने में मदद करता है। शिक्षा उन्हें रचनात्मक परिवर्तन लाने और समाज को उच्च स्तर तक ऊपर उठाने में मदद करती है। दुनिया में आधी आबादी महिलाओं की है (सुगुना, 2011) अगर महिलाएं उच्च शिक्षित होंगी तो देश अत्यधिक विकसित होगा। लेकिन, गरीबी, माता-पिता की बेरोजगारी, बाल विवाह, भेदभाव और असमानताएं जैसे कई कारक उन्हें शिक्षा तक पहुंचने से रोकते हैं। इस प्रकार, सरकारी एजेंसियां शिक्षा क्षेत्र में महिलाओं को नामांकित करने, बनाए रखने और बढ़ावा देने के अवसर खोलने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। इसलिए, वर्तमान अध्ययन उन शैक्षिक योजनाओं की पहचान करने पर केंद्रित है जो विभिन्न स्तरों पर महिलाओं की शिक्षा के लिए उपलब्ध हैं। साथ ही, पेपर का उद्देश्य महिलाओं के लिए उपलब्ध विभिन्न योजनाओं का विश्लेषण करना है। [5]

यह लेख मध्य प्रदेश राज्य में महिलाओं की स्थिति और ग्यारहवीं पंचवर्षीय योजना 2007-12 के अनुरूप मध्य प्रदेश सरकार द्वारा महिलाओं के लिए बनाए गए विभिन्न कार्यक्रमों और प्रावधानों को समझने का एक प्रयास है। इस समझ को बनाने में हमने उपलब्ध और विश्वसनीय सांख्यिकीय आंकड़ों की मदद ली है। सामाजिक संकेतकों पर ये आंकड़े हमें उनकी स्थिति के बारे में निष्कर्ष पर पहुंचने में सक्षम बनाते हैं। इन संकेतकों की मदद से मध्य प्रदेश में महिलाओं की स्थिति की व्यापक तस्वीर खींचने के लिए लिंग स्थिति की जांच करने का प्रयास किया गया है। इसके अलावा चल रही सरकार की प्रकृति और डिजाइन को समझने का प्रयास किया गया है। महिला सहायता और कल्याण के लिए योजनाएं। राज्य सरकार को यह भी एहसास है कि लिंग आधारित बजट विकास उद्देश्यों को प्राप्त करने में शक्तिशाली उपकरण है। इस लेख में हमने सरकार की इस पहल को भी समझने का प्रयास किया है। [6]

अनुसंधान पद्धति

यह शोध कार्य मिश्रित पद्धति पर आधारित है, जिसमें गुणात्मक और मात्रात्मक दोनों विधियों का उपयोग किया गया। मुख्य उद्देश्य यह जानना था कि शासकीय योजनाएँ अल्पशिक्षित महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने में कितनी सहायक हैं। अध्ययन में अधिकांश उत्तरदाता महिलाएँ अल्पशिक्षित या निरक्षर थीं, इसलिए उनकी प्रतिक्रियाएँ जानने के लिए प्रश्नावली की बजाय साक्षात्कार अनुसूची का प्रयोग किया गया। यह अनुसूची इस प्रकार तैयार की गई थी कि महिलाओं के जीवन से जुड़े विभिन्न पहलू, जैसे योजनाओं की जानकारी, पहुँच, प्रक्रिया की पारदर्शिता, प्रशिक्षण की गुणवत्ता, आर्थिक सहयोग और सामाजिक समर्थन, सामने आ सकें। अनुसूची का प्रारंभिक परीक्षण पायलट अध्ययन के रूप में 20 महिलाओं पर किया गया, जिससे प्रश्नों की स्पष्टता और उत्तर देने योग्य होने की पुष्टि हुई। इसके आधार पर अनुसूची में आवश्यक संशोधन कर अंतिम रूप दिया गया।

शोध का क्षेत्र मध्यप्रदेश के खंडवा जिले की विभिन्न तहसीलों और विकास खंडों तक सीमित रखा गया, और उत्तरदाता महिलाओं का चयन उद्देश्यपूर्ण नमूना चयन विधि के माध्यम से किया गया। केवल वही महिलाएँ शामिल की गईं जिन्होंने किसी न किसी शासकीय योजना का प्रत्यक्ष अनुभव किया या लाभ प्राप्त किया हो। कुल 650 महिलाओं से आँकड़े संकलित किए गए, जिनमें से 630 महिलाओं ने पूर्ण और विश्लेषण योग्य उत्तर प्रदान किए। आँकड़ों का विश्लेषण मुख्यतः आवृत्ति, प्रतिशत और उपयुक्त ग्राफ/चार्ट के माध्यम से किया गया, जिससे प्रवृत्तियों की स्पष्ट पहचान और शासकीय योजनाओं के प्रभाव का व्यापक एवं विश्वसनीय चित्र प्रस्तुत किया जा सके। इस पद्धति के माध्यम से अल्पशिक्षित महिलाओं की वास्तविक स्थिति और उनकी आत्मनिर्भरता पर योजनाओं के प्रभाव की गहन समझ प्राप्त हुई।

आकड़ा विश्लेषण और व्याख्या

अध्याय 4 में संकलित आँकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या प्रस्तुत की गई है। यह अध्याय शोध का केंद्रीय भाग है, क्योंकि आँकड़े ही यह स्पष्ट करते हैं कि सरकारी योजनाओं ने खंडवा जिले की अल्पशिक्षित महिलाओं पर क्या प्रभाव डाला। आँकड़ों का विश्लेषण आवृत्ति और प्रतिशत के आधार पर सारणी व ग्राफ द्वारा किया गया है। इसमें महिलाओं की सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि, योजनाओं तक पहुँच, प्रशिक्षण एवं लाभों के अनुभव तथा आत्मनिर्भरता पर पड़े प्रभाव को उजागर किया गया है। इस प्रकार यह अध्याय निष्कर्षों का ठोस आधार प्रदान करता है।

तालिका 1: आयु

आयु					
		Frequency	Percent	Valid Percent	Cumulative Percent
Valid	18-25 वर्ष	112	17.8	17.8	17.8
	26-35 वर्ष	212	33.7	33.7	51.4
	36-45 वर्ष	191	30.3	30.3	81.7
	45 वर्ष से अधिक	115	18.3	18.3	100.0
	Total	630	100.0	100.0	

उपरोक्त तालिका के अनुसार, उत्तरदाता महिलाओं की कुल संख्या 630 रही, जिनमें सबसे अधिक भागीदारी 26–35 वर्ष आयु वर्ग की महिलाओं की रही, जिनकी संख्या 212 रही, जो कुल का 33.7% है। इसके पश्चात 36–45 वर्ष आयु वर्ग की महिलाओं की संख्या 191 (30.3%) रही, जबकि 18–25 वर्ष की उत्तरदाता महिलाएँ 112 (17.8%) थीं। 45 वर्ष से अधिक आयु वर्ग की महिलाओं की भागीदारी अपेक्षाकृत कम रही, जिनकी संख्या 115 (18.3%) दर्ज की गई। यह वितरण स्पष्ट करता है कि अध्ययन में प्रमुख भागीदारी कार्यशील आयु वर्ग की महिलाओं की रही है, जो आत्मनिर्भरता की योजनाओं की प्रभावशीलता का मूल्यांकन करने हेतु उपयुक्त समूह है।

तालिका 2: शिक्षा स्तर (शैक्षणिक योग्यता)

शिक्षा स्तर (शैक्षणिक योग्यता)					
		Frequency	Percent	Valid Percent	Cumulative Percent
Valid	निरक्षर	187	29.7	29.7	29.7
	केवल हस्ताक्षर	155	24.6	24.6	54.3
	कक्षा 5 तक	141	22.4	22.4	76.7
	कक्षा 10 तक	147	23.3	23.3	100.0
	Total	630	100.0	100.0	

उपरोक्त तालिका के अनुसार, कुल 630 उत्तरदाताओं में सर्वाधिक 187 महिलाएँ (29.7%) निरक्षर पाई गईं, जबकि 155 महिलाएँ (24.6%) ऐसी थीं जो केवल हस्ताक्षर करना जानती थीं। कक्षा 5 तक शिक्षित महिलाओं की संख्या 141 (22.4%) रही, और कक्षा 10 तक शिक्षा प्राप्त करने वाली महिलाओं की संख्या 147 (23.3%) दर्ज की गई। यह वितरण दर्शाता है कि अधिकांश उत्तरदाता सीमित शैक्षणिक पृष्ठभूमि से संबंधित हैं, जिससे यह स्पष्ट होता है कि शोध का फोकस समूह – अल्पशिक्षित महिलाएँ – सही रूप में प्रतिनिधित्व करता है।

तालिका 3: वैवाहिक स्थिति

वैवाहिक स्थिति					
		Frequency	Percent	Valid Percent	Cumulative Percent
Valid	विवाहित	268	42.5	42.5	42.5
	अविवाहित	164	26.0	26.0	68.6
	विधवा	166	26.3	26.3	94.9
	परित्यक्ता	32	5.1	5.1	100.0
	Total	630	100.0	100.0	

उपरोक्त तालिका के अनुसार, कुल 630 उत्तरदाताओं में 268 महिलाएँ (42.5%) विवाहित थीं, जो सर्वाधिक संख्या में रही। इसके अतिरिक्त 164 महिलाएँ (26.0%) अविवाहित रहीं, जबकि 166 महिलाएँ (26.3%) विधवा की श्रेणी में थीं। परित्यक्ता महिलाओं की संख्या सबसे कम 32 (5.1%) रही। यह वितरण दर्शाता है कि उत्तरदाताओं में विवाहित महिलाओं की भागीदारी प्रमुख रही, परंतु विधवा और अविवाहित महिलाओं की संख्या भी उल्लेखनीय है, जो दर्शाता है कि विभिन्न वैवाहिक अवस्थाओं की महिलाओं ने शोध में सहभागिता की।

तालिका 4: पारिवारिक मासिक आय

पारिवारिक मासिक आय					
		Frequency	Percent	Valid Percent	Cumulative Percent
Valid	₹5000 से कम	66	10.5	10.5	10.5
	₹5000–₹10000	210	33.3	33.3	43.8
	₹10000–₹15000	207	32.9	32.9	76.7
	₹15000 से अधिक	147	23.3	23.3	100.0
	Total	630	100.0	100.0	

उपरोक्त तालिका के अनुसार, कुल 630 उत्तरदाताओं में 210 महिलाएँ (33.3%) ऐसी थीं जिनकी पारिवारिक मासिक आय ₹5000 से ₹10000 के बीच थी, जबकि 207 महिलाएँ (32.9%) ₹10000 से ₹15000 की आय वर्ग में आती थीं। ₹15000 से अधिक आय वाली महिलाओं की संख्या 147 (23.3%) रही, जबकि केवल 66 महिलाएँ (10.5%) ऐसी थीं जिनकी मासिक आय ₹5000 से कम थी। यह आँकड़े दर्शाते हैं कि अधिकांश उत्तरदाता निम्न से मध्यम आय वर्ग से संबंधित हैं, जो शासकीय योजनाओं की आवश्यकता एवं प्रभावशीलता को आँकने हेतु उपयुक्त समूह माना जा सकता है।

तालिका 5: निवास स्थान

निवास स्थान					
		Frequency	Percent	Valid Percent	Cumulative Percent
Valid	ग्रामीण	256	40.6	40.6	40.6
	अर्ध-शहरी	202	32.1	32.1	72.7
	शहरी	172	27.3	27.3	100.0
	Total	630	100.0	100.0	

उपरोक्त तालिका के अनुसार, कुल 630 उत्तरदाताओं में से 256 महिलाएँ (40.6%) ग्रामीण क्षेत्रों से थीं, जो सबसे अधिक भागीदारी दर्शाती हैं। इसके अतिरिक्त, 202 महिलाएँ (32.1%) अर्ध-शहरी क्षेत्रों से थीं, जबकि 172 महिलाएँ (27.3%) शहरी क्षेत्रों से संबंध रखती थीं। यह वितरण स्पष्ट करता है कि अध्ययन में ग्रामीण एवं अर्ध-शहरी क्षेत्रों की महिलाओं की भागीदारी अधिक रही, जो शासकीय योजनाओं की पहुँच और प्रभाव का आकलन करने के लिए महत्त्वपूर्ण आधार प्रदान करता है।

तालिका 6: जातिगत वर्ग

जातिगत वर्ग					
		Frequency	Percent	Valid Percent	Cumulative Percent
Valid	अनुसूचित जाति	222	35.2	35.2	35.2
	अनुसूचित जनजाति	138	21.9	21.9	57.1
	अन्य पिछड़ा वर्ग	134	21.3	21.3	78.4
	सामान्य	136	21.6	21.6	100.0
	Total	630	100.0	100.0	

उपरोक्त तालिका के अनुसार, कुल 630 उत्तरदाताओं में सर्वाधिक 222 महिलाएँ (35.2%) अनुसूचित जाति वर्ग से संबंधित थीं। अनुसूचित जनजाति की महिलाएँ 138 (21.9%) रहीं, जबकि अन्य पिछड़ा वर्ग की 134 महिलाएँ (21.3%) और सामान्य वर्ग की 136 महिलाएँ (21.6%) अध्ययन में सम्मिलित हुईं। यह जातिगत वितरण दर्शाता है कि अनुसूचित वर्गों की महिलाओं की भागीदारी सर्वाधिक रही, जिससे यह निष्कर्ष निकलता है कि सामाजिक रूप से वंचित वर्गों की महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने में शासकीय योजनाओं की भूमिका की जाँच इस अध्ययन में प्रमुखता से की गई है।

तालिका 7: उत्तरदाताओं के दृष्टिकोण

	पूर्णतः सहमत	सहमत	न तो सहमत, न असहमत	असहमत	पूर्णतः असहमत
स्वरोजगार के अवसर प्राप्त होने से जीवन में आत्मविश्वास बढ़ा है	115	126	153	45	191
घरेलू कार्यों से अलग सामाजिक गतिविधियों में भागीदारी बढ़ी है	256	178	116	42	38
निर्णय लेने की क्षमता में सुधार हुआ है	338	125	85	79	3
कम शिक्षा के बावजूद रोजगार में भागीदारी संभव हुई है	333	159	63	36	39
आत्मनिर्भर बनने की इच्छा समाज में स्वीकार की जा रही है	242	142	83	35	128
सीमित शिक्षा के बावजूद कार्यकुशलता का विकास हुआ है	131	110	186	90	113
छोटे स्तर पर स्वयं की आय सृजित की जा रही है	227	192	106	51	54
पारिवारिक उत्तरदायित्वों के साथ कार्य करने की क्षमता विकसित हुई है	355	117	84	63	11
आर्थिक योगदान से परिवार में सम्मान बढ़ा है	270	148	108	48	56
स्वयं के विकास के लिए नए अवसरों की खोज की जा रही है	219	185	76	27	123
योजनाओं की सहायता से प्रशिक्षण प्राप्त किया गया है	128	110	179	100	113
योजना का आवेदन एवं स्वीकृति की प्रक्रिया स्पष्ट रही है	227	185	113	48	57
योजनाओं से प्रारंभिक पूंजी या संसाधन उपलब्ध हुए हैं	358	114	84	63	11
योजना से जुड़ने के बाद आजीविका में सुधार हुआ है	270	141	115	48	56
योजनाओं में महिलाओं की भागीदारी को प्राथमिकता दी गई है	216	199	72	27	116
योजनाओं के तहत सहायता समय पर उपलब्ध कराई गई है	218	100	89	38	185
योजनाओं ने आर्थिक रूप से सक्रिय बनने की दिशा दिखाई है	273	139	78	14	126
सरकारी तंत्र से योजना संबंधी मार्गदर्शन प्राप्त हुआ है	350	42	127	100	11
योजना संबंधी गतिविधियाँ स्थानीय स्तर पर संचालित की जाती हैं	218	179	107	79	47
योजनाओं से जुड़ाव सामाजिक रूप से प्रेरणादायक सिद्ध हुआ है	262	153	111	21	83
योजनाओं की जानकारी समाचार या प्रचार माध्यमों से प्राप्त होती है	278	141	137	6	68
योजनाओं की जानकारी पंचायत या ग्राम सभा में दी जाती है	262	173	130	40	25
योजनाओं से संबंधित जानकारी समय पर नहीं मिल पाती है	314	167	94	50	5
योजनाओं के लाभ व शर्तें स्पष्ट नहीं होती हैं	299	192	71	43	25
कई योजनाओं की जानकारी केवल चयनित लोगों तक सीमित रहती है	238	126	81	63	122
योजनाओं के प्रचार में स्थानीय भाषा का अभाव रहता है	171	140	116	99	104
प्रशिक्षण या बैठकें पर्याप्त संख्या में आयोजित नहीं होतीं	253	180	106	37	54
जानकारी के अभाव में पात्र होने पर भी योजना का लाभ नहीं मिल पाता	349	91	70	60	60
स्थानीय अधिकारी योजनाओं की जानकारी देने में रुचि नहीं लेते	278	155	55	98	44
योजनाओं की जानकारी के लिए व्यक्तिगत प्रयास करना आवश्यक होता है	252	146	124	16	92
योजनाओं से आर्थिक सहायता मिलना संभव हुआ है	212	163	124	35	96
स्वरोजगार आरंभ करने में योजना की भूमिका रही है	235	235	65	59	36
नियमित आय का साधन प्राप्त हुआ है	220	170	97	86	57

सामाजिक सम्मान में वृद्धि महसूस की गई है	226	200	49	101	54
योजना से जुड़ाव के बाद परिवार का सहयोग बढ़ा है	260	112	142	19	97
समुदाय में नेतृत्व क्षमता विकसित हुई है	186	130	119	80	115
पारिवारिक निर्णयों में भागीदारी बढ़ी है	247	175	106	53	49
महिला समूहों के साथ सामूहिक कार्य करने का अवसर मिला है	319	117	84	72	38
सामाजिक पहचान में सकारात्मक बदलाव आया है	317	145	53	70	45
योजनाओं से प्राप्त लाभ दीर्घकालिक साबित हो रहे हैं	255	152	111	19	93
जन शिक्षण संस्थान द्वारा दिया गया प्रशिक्षण मेरी आजीविका कमाने में उपयोगी सिद्ध हुआ है	200	182	94	149	5
जन शिक्षण संस्थान ने मुझे आत्मनिर्भर बनने की दिशा में प्रेरित किया है	173	189	118	145	5
प्रशिक्षण प्राप्त करने के बाद समाज में मेरी पहचान और आत्मविश्वास बढ़ा है	221	169	208	29	3

परिकल्पनाओं का परीक्षण

H1: अल्प शिक्षित महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने हेतु शासकीय योजनाएं महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं।

ANOVA

अल्प शिक्षित महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने की स्थिति

	Sum of Squares	df	Mean Square	F	Sig.
Between Groups	15814.670	15	1054.311	995.960	.000
Within Groups	649.973	614	1.059		
Total	16464.643	629			

परिकल्पना H1 के परीक्षण के लिए किए गए ANOVA विश्लेषण के परिणाम दर्शाते हैं कि अल्पशिक्षित महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने में शासकीय योजनाएं महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं। कुल 630 उत्तरदाताओं के डेटा पर आधारित इस परीक्षण में, समूहों के बीच मानों का अंतर (Sum of Squares = 15814.670) काफी अधिक पाया गया, जिससे F मान 995.960 निकला जो कि सांख्यिकीय दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण (p = .000) है। इसका अर्थ यह है कि शासकीय योजनाओं का प्रभाव अल्पशिक्षित महिलाओं की आत्मनिर्भरता की स्थिति पर महत्वपूर्ण रूप से देखा गया है, जिससे यह परिकल्पना पूर्णतः सिद्ध होती है।

H2: अल्पशिक्षित महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने वाली शासकीय योजनाओं के प्रति जागरूकता का स्तर अल्पशिक्षित महिलाओं में कम हैं।

Correlations

		अल्प शिक्षित महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने की स्थिति	शासकीय योजनाओं के प्रति जागरूकता
अल्प शिक्षित महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने की स्थिति	Pearson Correlation	1	.961**
	Sig. (2-tailed)		.000
	N	630	630
शासकीय योजनाओं के प्रति जागरूकता	Pearson Correlation	.961**	1
	Sig. (2-tailed)	.000	
	N	630	630

**. Correlation is significant at the 0.01 level (2-tailed).

परिकल्पना H2 के परीक्षण हेतु किए गए सहसंबंध विश्लेषण से पता चलता है कि अल्पशिक्षित महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने की स्थिति और शासकीय योजनाओं के प्रति जागरूकता के बीच अत्यंत मजबूत सकारात्मक संबंध (Pearson Correlation = 0.961, p = 0.000) मौजूद है। इसका अर्थ है कि जैसे-जैसे महिलाओं में शासकीय योजनाओं के प्रति जागरूकता बढ़ती है, उनकी आत्मनिर्भरता की स्थिति भी बेहतर होती है। चूंकि जागरूकता का स्तर महिलाओं की आत्मनिर्भरता पर महत्वपूर्ण प्रभाव डालता है, यह सुझाव मिलता है कि अल्पशिक्षित महिलाओं में शासकीय योजनाओं के प्रति जागरूकता का स्तर कम होना उनकी आत्मनिर्भरता के लिए एक बाधा हो सकता है। अतः यह परिकल्पना सांख्यिकीय रूप से समर्थित है और जागरूकता बढ़ाने की आवश्यकता स्पष्ट होती है।

H3: अल्पशिक्षित महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने में शासकीय योजनाओं से महिलाओं को आर्थिक एवं सामाजिक दृष्टि से लाभ हो रहा हैं।

ANOVA					
अल्प शिक्षित महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने की स्थिति					
	Sum of Squares	df	Mean Square	F	Sig.
Between Groups	11301.592	20	565.080	66.653	.000
Within Groups	5163.050	609	8.478		
Total	16464.643	629			

परिकल्पना H3 के परीक्षण के लिए किए गए ANOVA विश्लेषण के परिणाम स्पष्ट करते हैं कि शासकीय योजनाओं से अल्पशिक्षित महिलाओं को आर्थिक एवं सामाजिक दृष्टि से लाभ प्राप्त हो रहा है। कुल 630 उत्तरदाताओं के आंकड़ों पर आधारित इस परीक्षण में समूहों के बीच मानों का अंतर (Sum of Squares = 11301.592) पर्याप्त पाया गया, जिससे F मान 66.653 निकला जो सांख्यिकीय रूप से अत्यंत महत्वपूर्ण (p = .000) है। इस महत्वपूर्ण परिणाम से यह स्पष्ट होता है कि शासकीय योजनाएं महिलाओं की आत्मनिर्भरता की स्थिति में आर्थिक एवं सामाजिक रूप से सकारात्मक प्रभाव डाल रही हैं। अतः यह परिकल्पना पूर्णतः स्वीकार्य है।

उपसंहार

यह अध्ययन "अल्पशिक्षित महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने में शासकीय योजनाओं की भूमिका" भारतीय समाज में महिला सशक्तिकरण और सहभागिता की वास्तविक स्थिति को विश्लेषणात्मक दृष्टि से प्रस्तुत करता है। यह शोध प्रश्नावली और साक्षात्कार पर आधारित एक सामाजिक अध्ययन है, जिसका उद्देश्य यह जानना था कि शासकीय योजनाओं ने अल्पशिक्षित महिलाओं के जीवन में किस प्रकार का परिवर्तन लाया है।

अध्ययन के निष्कर्षों से ज्ञात हुआ कि महिलाओं में योजनाओं के प्रति जागरूकता बढ़ रही है, परंतु यह सभी वर्गों में समान नहीं है। ग्रामीण, अर्ध-शहरी और शहरी क्षेत्रों की महिलाओं के अनुभवों में अंतर पाया गया, जो शिक्षा, सामाजिक वातावरण और पारिवारिक सहयोग पर निर्भर है। अधिकांश उत्तरदाताओं ने स्वीकार किया कि योजनाओं से उनकी आर्थिक स्थिति में सुधार हुआ, आत्मविश्वास बढ़ा और निर्णय लेने की क्षमता विकसित हुई।

फिर भी, योजनाओं की जानकारी का अभाव, जटिल प्रक्रियाएँ और प्रशासनिक उदासीनता जैसी बाधाएँ सामने आई। अध्ययन से यह भी स्पष्ट हुआ कि आत्मनिर्भरता केवल आर्थिक स्वतंत्रता तक सीमित नहीं है, बल्कि यह सामाजिक पहचान, नेतृत्व क्षमता और आत्मसम्मान से भी जुड़ी है।

निष्कर्षतः, शासकीय योजनाएँ अल्पशिक्षित महिलाओं के जीवन में सकारात्मक परिवर्तन ला रही हैं, पर उनकी प्रभावशीलता जागरूकता, पारिवारिक समर्थन, प्रशिक्षण, और स्थानीय प्रशासन की सक्रियता पर निर्भर करती है। यह शोध संकेत देता है कि यदि योजनाओं का क्रियान्वयन अधिक संवेदनशील और समावेशी रूप में हो, तो वे महिलाओं के आत्मनिर्भर और सशक्त समाज की नींव बन सकती हैं।

संदर्भ

[1] E. K. Fletcher, R. Pande, and C. Troyer, "Women and Work in India: Descriptive Evidence and a Review of Potential Policies," *J. Food Syst. Res.*, vol. 24, no. 3, pp. 161–326, 2017.

[2] S. Singh and A. Singh, "Women Empowerment in India: A Critical Analysis," *Tathapi*, vol. 19, no. 44, pp. 227–253, 2020.

[3] Abhishek Kumar, "Empowering Women Workers," no. September, 2020.

[4] D. Buddha and Deepika, *Women & Atmanirbhar Bharat*. 2022. doi: 10.1093/oso/9780192866486.003.0012.

[5] M. Kesang Sherpa, R. Rihunlang, and R. Scholar, "Women Education: Analysis of Educational Schemes Available for Women," vol. 6, no. 2, pp. 2320–2882, 2018.

[6] M. Tyagi, Y. Mahor, and C. Tyagi, "Women Status in MP and Planned Interventions," 2010.